International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

COPY RIGHT

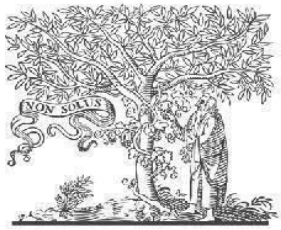

ELSEVIER SSRN

2023 IJIEMR. Personal use of this material is permitted. Permission from IJIEMR must be obtained for all other uses, in any current or future media, including reprinting/republishing this material for advertising or promotional purposes, creating newcollective works, for resale or redistribution to servers or lists, or reuse of any copyrighted component of this work in other works. No Reprint should be done to this paper; all copy right is authenticated to Paper Authors

IJIEMR Transactions, online available on 31th Nov 2023. Link

https://ijiemr.org/downloads.php?vol=Volume-12&issue= Issue08

DOI:10.48047/IJIEMR/V12/ISSUE08/78

Title: " माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शारीरिक दिव्यांगता की अवधारणा का अध्ययन "

Volume 12, ISSUE 08, Pages: 529- 535

Paper Authors
Nishant Kumar, Dr. Ajeet Singh Yadav

USE THIS BARCODE TO ACCESS YOUR ONLINE PAPER

To Secure Your Paper as Per UGC Guidelines We Are Providing A ElectronicBar code

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शारीरिक दिव्यांगता की अवधारणा का अध्ययन

Nishant Kumar, Dr. Ajeet Singh Yadav
Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सारांश

विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व, बुद्धि और समायोजन एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है, जो शिक्षा और समाजशास्त्र दोनों दृष्टिकोणों से गहन अध्ययन की मांग करता है। माध्यमिक स्तर वह समय है जब विद्यार्थी अपने जीवन के प्रमुख चरण में प्रवेश करते हैं और उनके व्यक्तित्व, बुद्धि और समायोजन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस समयावधि में, व्यक्तित्व, जो कि एक व्यक्ति की मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विशेषताओं का एक मिश्रण होता है, अपने आप में परिपक्वता की ओर बढ़ता है। इस स्तर पर, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर उनके पारिवारिक वातावरण, सामाजिक संबंध, और विद्यालय का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अंतर होता है, जो कि उनकी विशेष आवश्यकताओं और सामाजिक सहभागिता के विभिन्न तरीकों से प्रभावित होता है। व्यक्तित्व का विकास बच्चों के जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही प्रारंभ हो जाता है, लेकिन माध्यमिक स्तर पर यह अधिक सुस्पष्ट और स्थायी रूप लेता है। सामान्य विद्यार्थियों के मामले में, सामाजिक संपर्क, खेल, सह-पाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ, और शिक्षकों के साथ संवाद उनके व्यक्तित्व को निखारने में सहायक होते हैं। दूसरी ओर, विकलांग विद्यार्थियों के मामले में, व्यक्तित्व विकास के लिए विशेष ध्यान और समर्थन की आवश्यकता होती है। यह समर्थन उन्हें आत्म-स्वीकृति, आत्म-विश्वास और सामाजिक सहभागिता में सहायता करता है। विकलांग बच्चों को अक्सर समाज में स्वीकृति प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जो उनके आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास को प्रभावित करता है। इस स्थिति में, परिवार और विद्यालय दोनों का सहयोग आवश्यक होता है ताकि वे अपनी विशेष आवश्यकताओं के साथ सामाजिक रूप से सक्रिय और आत्मविश्वासी बन सकें।

मुख्यशब्दः- माध्यमिक स्तर, विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सामाजिक संवाद, सोच, व्यवहार,

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा और व्यक्तित्व विकास एक व्यापक और महत्वपूर्ण विषय है, जो न केवल शैक्षणिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि विद्यार्थियों के संपूर्ण जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। माध्यमिक शिक्षा वह समय होता है जब विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास का महत्वपूर्ण चरण होता है। इस समयावधि में, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थियों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि वे सामाजिक, नैतिक, और भावनात्मक रूप से भी विकसित होते हैं। इस विकास की प्रक्रिया में विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का मार्गदर्शन, सहपाठियों के साथ संबंध, और पारिवारिक समर्थन सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तित्व विकास का तात्पर्य उन गुणों, आदतों, और विशेषताओं के निर्माण से है जो एक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से अलग और विशिष्ट बनाते हैं। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विभिन्न कारकों का प्रभाव पड़ता है। सबसे पहले, विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक और सहायक विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों को आत्म-विश्वास, स्व-नियंत्रण, और सामाजिक कौशल विकसित करने में सहायता करता है। शिक्षकों का मार्गदर्शन भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। एक अच्छा शिक्षक न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि विद्यार्थियों को नैतिकता, अनुशासन, और आत्म-स्वीकृति की भावना भी सिखाता है।

सहपाठियों के साथ संबंध भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण होते हैं। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ बातचीत करते हैं, समूह कार्यों में भाग लेते हैं, और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं। यह अनुभव उन्हें सहयोग, समर्पण, और नेतृत्व जैसे गुण विकसित करने में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, सहपाठियों के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी विद्यार्थियों को अपने कौशल और क्षमताओं को सुधारने के लिए प्रेरित करती है।

पारिवारिक समर्थन भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी अपने परिवार के सदस्यों से मार्गदर्शन और समर्थन प्राप्त करते हैं। परिवार का स्नेह, समझ, और समर्थन विद्यार्थियों को आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान विकसित करने में सहायता करता है। माता-पिता का प्रोत्साहन और मार्गदर्शन विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त, पारिवारिक मूल्यों और नैतिकताओं का प्रभाव भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

विकलांगता:

"विकलांगता" एक व्यापक और महत्वपूर्ण विषय है जो समाज में व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, या बुद्धिजीवी क्षमताओं में किसी प्रकार की कमी को संकेत करता है। यह एक समाजिक, मानवीय, और नैतिक मुद्दा है जिसे हर समाज को समझने और समाधान करने की आवश्यकता होती है। विकलांगता का समझना समाज के लिए एक प्रशिक्षण है जो हमें समाज में समावेशीता, समर्थन, और सम्मान के लिए प्रेरित करता है।

विकलांगता के प्रकार विभिन्न हो सकते हैं। शारीरिक विकलांगता उस स्थिति को संकेत करती है जब व्यक्ति के शारीरिक अंगों में कमी होती है, जैसे कि अंगूठे की कमी, पैरों की कमी, या अंधापन। मानसिक विकलांगता में व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य में कमी होती है, जैसे कि मानसिक विकार, असमर्थता, या विकासात्मक विकलांगता। इसके अलावा, बुद्धिजीवी विकलांगता व्यक्ति के बुद्धिजीवी क्षमताओं में कमी को संकेत करती है, जैसे कि विकासात्मक विकलांगता, विशेष शिक्षा की आवश्यकता, या समाजिक संवाहकता।

विकलांग व्यक्तियों को समाज में समावेशी बनाने के लिए उन्हें उनके अधिकारों की सुरक्षा और समर्थन की आवश्यकता होती है। विकलांगता के कारण व्यक्ति का जीवन उसके लिए अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जैसे कि शैक्षिक प्राविधिकता, रोजगार प्राप्ति, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, और सामाजिक

संबंधों में समावेश। इन सभी क्षेत्रों में विकलांग व्यक्तियों को समर्थन और सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं, समाज, और व्यक्ति भूमिका निभाने में सक्षम होने चाहिए।

विकलांगता के साथ जीवन जीने वाले व्यक्तियों के लिए व्यापार, सरकार, और समाज को समाधान और समर्थन प्रदान करने की जरूरत होती है। समाज में जागरूकता और शिक्षा की आवश्यकता होती है ताकि सभी व्यक्तियों को समाज में समान अवसर मिल सकें। विकलांग व्यक्तियों के लिए उच्च शिक्षा, व्यापार के अवसर, और समाजिक समावेशन की नीतियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।

विकलांगता के विषय में अधिक समझने के लिए समाज को शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूक करने की आवश्यकता है। विकलांगता के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने से समाज की समझ बढ़ती है और उसे विकलांग व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति और समर्थन के लिए तैयार होने में मदद मिलती है। विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा और समर्थन को सुनिश्चित करने के लिए सरकार, गैर सरकारी संगठन, और समाजी संगठनों के साथ सहयोग करने की जरूरत होती है।

विकलांगता एक समृद्ध समाज की अनिवार्य और महत्वपूर्ण अंग है। इसे दृष्टिगत बदलते समय के साथ समझा और समाधान करना आवश्यक है ताकि हमारी समाजिक संरचना में सभी का समावेश हो सके और सभी को अवसर मिल सके। विकलांगता का समाधान केवल समाज की सामाजिक संरचना में परिवर्तन करके ही संभव है, जिसमें सभी व्यक्तियों को समान अवसर और समर्थन प्रदान किया जाता हो।

शारीरिक विकलांगता की अवधारणा

विद्यार्थियों की शारीरिक विकलांगता की अवधारणा और पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए, यह जरूरी है कि हम इस विषय को समझें और उसे समाज के साथ जोड़ें। शारीरिक विकलांगता एक समाजिक मुद्दा है जिसमें व्यक्ति के शारीरिक क्षमताओं में कोई अवरोध होता है, जो उनके दैनिक जीवन और शैक्षिक कार्यक्षमता पर प्रभाव डाल सकता है। विद्यार्थियों में इस तरह की विकलांगता सामाजिक, शैक्षिक और पेशेवर विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिबंधिता बन सकती है।

शारीरिक विकलांगता की समझ में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जाता है, जैसे कि उसके प्रकार, कारण, और प्रभाव। यह समस्या जन्म से हो सकती है या यदि किसी घातक घटना के कारण आये, तो उसे अपारद विकलांगता कहते हैं। इसके अलावा, विकलांगता की गंभीरता और प्रकार व्यक्ति के जीवन पर कैसे प्रभाव डालते हैं, इसे समझने में महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थियों की शारीरिक विकलांगता के प्रति समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता का विकास करना आवश्यक है। यह समाज के सभी सेक्टरों, विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में, समावेशीता की दिशा में प्रगति करने के लिए आवश्यक है। शिक्षा संस्थानों में समाज के साथ

मिलकर काम करते हुए, विद्यार्थियों को शारीरिक विकलांगता के प्रति समर्पितता और सम्मान का माहौल प्रदान किया जा सकता है।

शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के लिए उच्च शैक्षिक मानकों और योग्यता में समानता सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षकों और शिक्षा निर्माताओं को विशेष योग्यता और साधन प्रदान करने की आवश्यकता है ताकि वे विकलांग विद्यार्थियों के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित कर सकें।

शारीरिक विकलांगता को समाज में स्वीकार्यता और समावेशीता के संकेत के रूप में देखना चाहिए। यह समाज के निर्माण में विशेष योगदान दे सकती है और विद्यार्थियों को समर्थन और प्रेरणा प्रदान करके उनके पोटेंशियल को समझने में मदद कर सकती है। शिक्षा संस्थानों में विशेष उपकरणों, सुविधाओं और पाठ्यक्रमों का विकास करना जरूरी है ताकि शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों का विकास सम्भव हो सके।

विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व: चुनौतियाँ और समाधान

विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व: चुनौतियाँ और समाधान एक संवेदनशील और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो विशेष ध्यान और गहन अध्ययन की मांग करता है। विकलांग विद्यार्थी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, और उनके व्यक्तित्व विकास में अनेक चुनौतियाँ होती हैं। इन चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए हमें एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिसमें शैक्षणिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत स्तर पर सहयोग और समर्थन की आवश्यकता होती है।

➢ चुनौतियाँ

1. **शारीरिक और मानसिक बाधाएँ**: विकलांग विद्यार्थियों को उनकी शारीरिक या मानसिक सीमाओं के कारण रोज़मर्रा की गतिविधियों में कठिनाई हो सकती है। यह सीमाएँ उनके आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान को प्रभावित कर सकती हैं।

2. **सामाजिक स्वीकृति**: विकलांग विद्यार्थियों को समाज में स्वीकार्यता प्राप्त करने में कठिनाई होती है। समाज में व्याप्त पूर्वाग्रह और भेदभाव उन्हें अलग-थलग महसूस करा सकते हैं, जिससे उनका सामाजिक विकास बाधित हो सकता है।

3. **शैक्षिक चुनौतियाँ**: विकलांग विद्यार्थियों के लिए पारंपरिक शिक्षण विधियाँ हमेशा प्रभावी नहीं होतीं। उन्हें विशेष शिक्षण विधियों और उपकरणों की आवश्यकता होती है, जो हर विद्यालय में उपलब्ध नहीं होतीं।

4. **भावनात्मक संघर्ष**: विकलांग विद्यार्थी अक्सर भावनात्मक संघर्ष का सामना करते हैं, जैसे कि निराशा, हताशा, और अकेलापन। यह संघर्ष उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं और उनके व्यक्तित्व विकास में बाधा बन सकते हैं।

5. **परिवारिक दबाव**: कई बार विकलांग विद्यार्थियों के परिवार पर अतिरिक्त दबाव होता है, जो कि आर्थिक, भावनात्मक, और सामाजिक हो सकता है। परिवार का यह दबाव विद्यार्थियों के विकास को भी प्रभावित कर सकता है।

➢ **समाधान**

1. **समावेशी शिक्षा प्रणाली**: विकलांग विद्यार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली का पालन आवश्यक है। इसका अर्थ है कि उन्हें सामान्य विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलें, जिससे वे सामाजिक रूप से सक्रिय और आत्म-विश्वासी बन सकें। इसके लिए विद्यालयों को विशेष शिक्षा कार्यक्रमों और सहायक उपकरणों का प्रावधान करना चाहिए।

2. **सहायक तकनीक और उपकरण**: विशेष शिक्षण विधियों और सहायक उपकरणों का उपयोग विकलांग विद्यार्थियों के शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि, सुनने में कठिनाई वाले विद्यार्थियों के लिए श्रवण यंत्र, और शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए व्हीलचेयर और अन्य उपकरणों का प्रावधान करना चाहिए।

3. **मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समर्थन**: विकलांग विद्यार्थियों के लिए मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समर्थन अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालयों में परामर्श सेवाओं का प्रावधान किया जाना चाहिए, जो उन्हें उनके भावनात्मक संघर्ष से निपटने में सहायता कर सकें। इसके अलावा, परिवार और शिक्षकों का समर्थन भी आवश्यक है, जिससे वे आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान विकसित कर सकें।

4. **सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता**: समाज में विकलांगता के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इससे समाज में व्याप्त पूर्वाग्रह और भेदभाव को कम किया जा सकता है और विकलांग विद्यार्थियों को एक समावेशी वातावरण प्रदान किया जा सकता है।

5. **परिवार का समर्थन**: परिवार का समर्थन विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार के सदस्यों को प्रोत्साहित और मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए ताकि वे अपने बच्चों के विकास में सहायता कर सकें। इसके अलावा, परिवारों को भी परामर्श और समर्थन सेवाएँ प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपनी चुनौतियों का सामना कर सकें।

6. **सकारात्मक रोल मॉडल**: विकलांग विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक रोल मॉडल का होना प्रेरणादायक हो सकता है। ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण प्रस्तुत किए जाने चाहिए जिन्होंने विकलांगता के बावजूद अपने जीवन में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इससे विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती है और वे अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने लगते हैं।

7. **कौशल विकास कार्यक्रम**: विकलांग विद्यार्थियों के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। यह कार्यक्रम उनके आत्म-निर्भरता और आत्म-विश्वास को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, इन्हें रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करने में भी सहायता करते हैं।

8. **सामुदायिक सहभागिता**: विकलांग विद्यार्थियों को विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इससे वे सामाजिक रूप से सक्रिय हो सकते हैं और उनके सामाजिक कौशल का विकास होता है।

निष्कर्ष

विकलांग या संदिग्ध विकलांगता वाले छात्रों का मूल्यांकन स्कूलों द्वारा यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि क्या वे विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए पात्र हैं और, यदि पात्र हैं, तो यह निर्धारित करने के लिए कि कौन सी सेवाएँ प्रदान की जाएंगी। कई राज्यों में, इस मूल्यांकन के नतीजे इस बात पर भी असर डालते हैं कि छात्रों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए स्कूल को कितनी फंडिंग सहायता मिलेगी। विशेष शिक्षा वर्गीकरण राज्यों या क्षेत्रों में एक समान नहीं है। समान विशेषताओं वाले छात्रों को एक राज्य में विकलांग के रूप में निदान किया जा सकता है, लेकिन दूसरे में नहीं और जब वे राज्य या स्कूल जिले की सीमा में चले जाते हैं तो उन्हें पुनर्वर्गीकृत किया जा सकता है। स्पष्ट चिकित्सा आधार वाली अधिकांश विकलांगताओं को बच्चे के चिकित्सक या माता-पिता द्वारा जन्म के तुरंत बाद या पूर्वस्कूली वर्षों के दौरान पहचाना जाता है। इसके विपरीत, अधिकांश विकलांग छात्रों को शुरुआत में गंभीर और पुरानी उपलब्धि या व्यवहार संबंधी समस्याओं के कारण उनके कक्षा शिक्षक (या माता-पिता) द्वारा मूल्यांकन के लिए भेजा जाता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

- एंडरसन, ई.एम. (2021), द डिसेबल्ड स्कूलचाइल्ड। लंदन: मेथुएन एंड कंपनी लिमिटेड
- अल-फ़राह, वाई. (2021)। दृश्य, शारीरिक और श्रवण विकलांगता वाले लोगों की भावनात्मक अनुकूलता और लिंग और उम्र से इसका संबंध। अरब जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 9, 33-70।
- बार्कर आरजी, राइट बीए, जेनिक एचआर (2022)। शारीरिक विकलांगता और बीमारी का समायोजन: शरीर और विकलांगता के सामाजिक मनोविज्ञान का एक सर्वेक्षण। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद बुल;55:1953.
- भारद्वाज, सुंदर जी, पी राजन वररदराजन और जॉन फाही (2022)। 'सेवा उद्योगों में सतत प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: एक वैचारिक मॉडल और अनुसंधान प्रस्ताव'। जर्नल ऑफ मार्केटिंग, 57 (अक्टूबर), 83-99।
- कार्टर, वी.ई. और शतरंज एस. (2022)। जैविक रूप से विकलांग बच्चों के अनुकूलन को प्रभावित करने वाले कारक। ऑर्थोसाइकिएट्री के अमेरिकन जर्नल टी। 21, 827-837.

- इलियास, एम.जे., गारा, एम., शूयलर, टी., ब्रैंडन-मुलर, एल.आर., और सेयेट, एम.ए. (2021)। सामाजिक क्षमता को बढ़ावा देना: एक निवारक स्कूल-आधारित कार्यक्रम का अनुदैर्ध्य अध्ययन। अमेरिकन जर्नल ऑफ़ ऑर्थोसाइकिएट्री, 61(3), 409-417।
- एनिओला एम.एस. और अदेबियी के. (2017), भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लक्ष्य निर्धारण - नाइजीरिया में दृष्टिबाधित छात्रों के बीच काम करने की प्रेरणा बढ़ाने के लिए हस्तक्षेपों की जांच, ब्रिटिश जर्नल ऑफ विजुअल इम्पेयरमेंट 2017 25: 249
- एनिओला, एम.एस. और बुसारी ए.ओ. (2017) फेडरल कॉलेज ऑफ एजुकेशन (स्पेशल) ओयो, नाइजीरिया के दृष्टिबाधित नए छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता को बढ़ावा देने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मेडवेल जर्नल्स: द सोशल साइंसेज, 2(2): 152-155।
- जैन एस. (2018), भावनात्मक दक्षताओं के सहसंबंध के रूप में चिंता, धर्म और सामाजिक-आर्थिक स्थिति। डॉक्टरेट शोध प्रबंध आगरा, आगरा विश्वविद्यालय।
- मेयर, जे.डी., और सलोवी, पी. (2021)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और भावनाओं का निर्माण और विनियमन। अनुप्रयुक्त एवं निवारक मनोविज्ञान, 4.197-208.
- माइक एस. एनिओला और कुनलएडेबी, (2017), भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लक्ष्य निर्धारण-नाइजीरिया में दृष्टिबाधित छात्रों के बीच काम करने की प्रेरणा बढ़ाने के लिए हस्तक्षेपों की जांच, ब्रिटिश जर्नल ऑफ विजुअल इम्पेयरमेंट। 25:249.
- पांडा ए (2019)। दृष्टिबाधित किशोरियों की उनकी आकांक्षा के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, डॉक्टोरल थीसिस सार http://old.jmi.ac.in/2000/Research/ab2010_education_amruta.pdf से प्राप्त किया गया